पटना की जोनल कार्यशाला में उभरे संकल्प-'चलो गुरुदेव के सपने सजाने की शपथ ले लें।'

गायत्रीतीर्थ-शांतिकुंज, हरिद्वार के तत्वावधान एवं जोनल केंद्र गायत्री शक्तिपीठ, पटना के संयोजकत्व में 'मुक्ताकाश' भारतीय नृत्य कला मंदिर फ्रेजर रोड, पटना में बिहार प्रान्त के गायत्री परिवार के परिजनों की दो दिवसीय कार्यशाला (१५ एवं १६ फरवरी २००८) पूर्वाह्न १०.३० बजे शुरू हुई। दीप प्रज्वलन गायत्री परिवार के प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के द्वारा किया गया। देवमंच पर गुरुसत्ता और गायत्री माता का भावभीना आह्वान हुआ। वेदोक्त संज्ञान सूक्त का संस्कृत एवं हिन्दी भाषा में पाठ हुआ। फिर प्रेरणादायी प्रज्ञागीत का गायन हुआ, जिसके बोल थे-''हमारा है यह दृढ़ संकल्प, नया संसार बसायेंगे''। इस गीत को उपस्थित दो हजार पाँच सौ भाई-बहिनों ने दुहराया।

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के मुख्य उद्‌बोधन का प्रतिपाद्य विषय था-''महान अभियान की विराट यात्रा : हमारे दायित्व, हमारा सौभाग्य''। उन्होंने अपने व्याख्यान में परम पूज्य गुरुदेव, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि अरविन्द, रामकृष्ण परमहंस जैसे महापुरुषों; जीन डिक्सन, प्रो.हरार, नोस्ट्राडेमस जैसे अतीन्द्रिय क्षमता सम्पन्न मनीषियों; बाईबिल, इस्लामिक किताब, भागवत पुराण, हरिवंश पुराण एवं वाल्मीकि रामायण जैसे महान ग्रंथों को उद्‌धृत करते हुए यह सिद्ध किया कि समय बदल रहा है, सतयुग आ रहा है। हम परिवर्तन के महान क्षणों में जी रहे हैं।

उन्होंने उपस्थित परिजनों को उनके जन्मजन्मान्तरों से जुड़ी जाग्रत् आत्मा होने का स्मरण कराया। इस बात की स्मृति दिलाई कि यह बहुत बड़ा सौभाग्य है। परन्तु इसके साथ जुड़े हुए कुछ महान दायित्व भी हैं। यह भी बोध कराया।

अपराह्न के २.३० बजे प्रारंभ होने वाले दूसरे सत्र का प्रतिपाद्य विषय था-'परम पूज्य गुरुदेव की वसीयत और विरासत के प्रकाश में हमारी जीवन साधना'। इससे पूर्व गीत गाया-''सुनो युगऋषि के जीवन की पुण्य कहानी.........''। विषय का प्रतिपादन श्रद्धेय वीरेश्वर उपाध्याय जी ने किया। उन्होंने उपस्थित परिजनों को जीवन साधना के बारे में जागरूक किया।

कार्यशाला की उपलब्धियाँ

समयदान : आजीवन - २३, एक वर्ष - १४, छः माह - १८, तीन माह - ९१, दो माह - ३३, एक माह - ४७८

अंशदान : (देव संस्कृति विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं के लिए छात्र वृत्तियों की घोषणा)
दानदाता भाई-बहिनों की संख्या - १११
कुल संकल्पित राशि - २१ लाख रुपये

इस कार्यशाला में बिहार प्रान्त में निर्धारित उत्तर जोन, पूर्वोत्तर जोन तथा पूर्व जोन के २५०० भाई-बहिन सम्मिलित हुए। कार्यशाला का उद्देश्य है गायत्री परिवार के लोकसेवी कार्यकर्त्ताओं की योग्यता, अनुभव, प्रशिक्षण एवं कौशल की वृद्धि। कार्यशाला की फलश्रुति के रूप में श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं शांतिकुंज के वरिष्ठ भाई 'समयदान' के संकल्पों की श्रद्धांजलि गुरुचरणों में ले जायेंगे। इसमें कुछ परिजन एक वर्ष; कुछ ६ माह तथा कुछ ३ माह का समयदान देने वाले होंगे।

आदरणीय डॉ. साहब का दूसरा व्याख्यान देव संस्कृति विश्वविद्यालय के बारे में था। उन्होंने इसे शिक्षा और विद्या के सार्थक समन्वय के रूप में निरूपित करते हुए उसे नालन्दा-तक्षशिला के स्तर तक ऊँचा उठाने के लिए अपने आपको तथा शांतिकुंज को प्रतिबद्ध बताया। वहाँ पढ़ने वाले छात्रों-छात्राओं के अध्ययन में सहायता के रूप में छात्रवृत्ति दाताओं का आह्वान उन्होंने किया। इसके सत्परिणाम भी आये। अनेकों भाई-बहिनों ने आगे बढ़कर छात्रवृत्तियों की घोषणा की। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के पटना स्थित दूरस्थ शिक्षा केन्द्र में पंजीकृत एवं अध्ययनरत ८५ भाई-बहिनों को ज्ञानदीक्षा दी गयी तथा उन्हें संकल्प दिलाया गया।

सायंकालीन सत्र में देव संस्कृति विश्वविद्यालय पर व्याख्यान एवं फिल्म के प्रदर्शन के उपरान्त श्री कालीचरण शर्मा जी ने 'संगठन की रीति-नीति' पर बोलते हुए यह निरूपित किया कि गुरुसत्ता के सूक्ष्म और कारण शरीर में रहने पर यह संगठन ही उनका स्थूल शरीर है। वेदोक्त मंत्र ''सहस्र शीर्षा पुरुषः.......'' को उद्‌धृत करते हुए बताया गया कि असंख्य सिरों, हाथों और पैरों वाले जिस भगवान के बारे में वर्णन आता है, जो युग प्रत्यावर्तन करने में समर्थ है, वह संगठन या संघ शक्ति ही है।

कार्यशाला का दूसरा दिन

दिन का आरंभ प्रातः ६ बजे ध्यान से हुआ। आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने निर्देश दिये तथा उपस्थित परिजनों ने सविता का ध्यान किया। ध्यान के पश्चात् उन्होंने ध्यान का महात्म्य बताया तथा दस प्रकार के ध्यान के बारे प्रकाश डाला। प्रोजेक्टर स्क्रीन पर विभिन्न प्रकार के ध्यान-प्रयोगों को स्पष्ट करने वाले चित्र भी उपस्थित होते थे, इससे सबको समझने में सहायता मिली।

दूसरा सत्र लम्बा था, इसमें चार महत्त्वपूर्ण विषयों पर शांतिकुंज के वरिष्ठ भाईयों ने व्याख्यान दिये- (१) **समयदान ही युगधर्म**-वक्ता-आदरणीय बृजमोहन गौड़ जी। इस व्याख्यान के पूर्व प्रज्ञागीत हुआ, जिसमें युगधर्म के लिए आह्वान था। परम पूज्य गुरुदेव के मार्मिक वाक्यों को प्रोजेक्टर पर उद्‌धृत करते हुए उन्होंने समयदान को इस युग का युगधर्म निरूपित किया। कई महापुरुषों के प्रेरक दृष्टान्त बताये, जिससे परिजनों को समझने में सहायता मिली।

(२) **समयदान का सुनियोजन :** वक्ता-आदरणीय केसरी कपिल जी। गायत्री शक्तिपीठों को प्रज्ञावतार के लीला केन्द्र बताते हुए तथा उनकी महत्ता को प्रतिपादित करते हुए उन्होंने समयदान के सुनियोजन पर विस्तृत प्रकाश डाला। विभिन्न योग्यता तथा समयावधि के दान हेतु उत्सुक परिजन किस तरह अपने समयदान को लगा सकते हैं, इसे पू.गुरुदेव का उदाहरण एवं व्यावहारिक उदाहरण देकर समझाया। बहुत से परिजनों को इससे सहायता मिली।

(३) **गुरुसत्ता तथा मिशन की आपसे अपेक्षाएँ :** वक्ता-आदरणीय गौरीशंकर शर्मा। उनके व्याख्यान के पूर्व एक बहुत ही प्रभावशाली गीत का गायन हुआ-''भ्रम के भटकावे छोड़ो, कुछ काम प्रभु का कर लो रे ....''। इस गीत में भावप्रवण गायन के साथ अभिनय का भी संयोजन था। परिजनों ने प्रेरणा भी ली तथा आनन्द भी लिया। आदरणीय गौरीशंकर शर्मा जी ने कई मार्मिक उदाहरण देते हुए बताया कि परम पूज्य गुरुदेव परिजनों से क्या चाहते हैं? उन्होंने परिजनों को और अधिक समझदार, ईमानदार, जिम्मेदार और बहादुर बनने की प्रेरणा दी।

(४) **अर्थानुशासन :** वक्ता-श्री एच.पी. सिंह जी। मिशन के व्यापक सेवा कार्यों में लगे हुए लाखों परिजनों को अर्थ के बारे में किस तरह सावधानी पूर्वक हिसाब-किताब रखना चाहिये, इस पर इन्होंने प्रकाश डाला। परिजनों द्वारा केन्द्र को भेजी जाने वाली राशि को बैंक के एकाउण्ट्स में किस तरह सीधे जमा कराना है, समय-सयम पर ट्रस्ट के हिसाब-किताब का ऑडिट कराना है, जैसे विषयों की बारीकियों को समझाया।

तीसरा सत्र - भोजन के बाद शुरू होने वाले तीसरे सत्र में (जिसकी समयावधि तीन घंटे से भी अधिक थी) दो गतिविधियाँ समानांतर रूप से चलीं। पहली समूह चर्चा एवं दूसरी गुरुदेव-माताजी की चरण पादुकाओं का पंक्तिबद्ध होकर प्रणाम का क्रम।

पूर्वोत्तर जोन एवं उत्तर जोन से पधारे हुए परिजनों के अलग-अलग समूह बनाये गये थे। टाटानगर में चूँकि एक कार्यशाला पहले ही सम्पन्न हो चुकी थी, अतः वहाँ से कम परिजन आये थे, परन्तु उनका भी समूह अलग रखा गया था। पूर्व जोन के अन्तर्गत बिहार से आये परिजनों की संख्या सर्वाधिक थी, अतः उन्हें उपजोनों के क्रम में अलग-अलग बिठाया गया था। इस समूह चर्चा में विभिन्न बिन्दुओं पर गहन विचार-विमर्श हुआ तथा उसी दौरान समयदान का संकल्प पत्र भी भरा गया। बीच-बीच में देव संस्कृति विश्वविद्यालय हेतु छात्रवृत्ति प्रदान करने वालों के नाम भी आते रहे। समय-समय पर उनकी घोषणाएँ भी होती रहीं।

चतुर्थ सत्र (विदाई सत्र)

यह सत्र सायंकाल ५.३० से प्रारंभ हो गया। गुरुवन्दना के पश्चात् आदरणीय बृजमोहन गौड़ जी ने समूह चर्चा के निष्कर्ष सबके सामने रखे। जब उन्होंने पटना जोनल कार्यशाला की उपलब्धियाँ (समयदान और अंशदान) को पटल पर रखा तो देर तक करतल ध्वनि होती रही।

आदरणीय केसरी कपिल जी ने बिहार प्रान्त के लिए एक वर्षीय कार्ययोजना पढ़कर सुनाई तथा उसके कई उल्लेखनीय बिन्दुओं को और भी अधिक स्पष्ट किया। उनमें से कई कार्य समय और श्रमसाध्य भी हैं।

कुछ चुने हुए प्रतिभागियों को कार्यशाला के सम्बन्ध में अपने विचार रखने के लिए आमंत्रित किया गया, ये परिजन विभिन्न उपजोन से लिये गये थे। श्री लाल बिहारी सिंह (सासाराम), श्री नरेन्द्र सिंह (मुजफ्फरपुर), श्रीमती ललिता राणा (हजारीबाग), प्रो. बिन्देश्वरी प्र. सिंह (आरा), श्रीमती नीलम सिंह (पटना) तथा पप्पू जी (मुजफ्फरपुर) ने क्रमशः अपने विचार रखे। बिहार के परिजनों की ओर से आभार ज्ञापन गया उपजोन के श्री विजय शर्मा ने किया।

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के विदाई उद्‌बोधन के पहले उद्‌गाता बन्धुओं (श्री गोविन्द पाटीदार, श्री ओंकार पाटीदार एवं श्री प्रेमलाल बिर्ला) ने एक भावप्रवण गीत गाया। ''चलो गुरुदेव के सपने सजाने की शपथ ले लें ...''।

अपने विदाई उद्‌बोधन में आदरणीय डॉ. साहब ने प्रतिभागी भाई-बहिनों को परम पूज्य गुरुदेव के जन्म शताब्दी वर्ष २०११ से संबंधित दायित्वों का बोध कराया तथा आह्वान किया कि उन्हें आगामी तीन वर्षों में तीस वर्षों जितना काम करना है। सृजन सैनिकों (परिजनों) को आत्म-निर्माण के ऐसे सूत्र भी बताये, जो लोकसेवियों को सदैव स्मरण रखने चाहिए। परम पूज्य गुरुदेव के कई मार्मिक कथनों को उद्‌धृत करते हुए उन्होंने परिजनों को विश्वास दिलाया कि आप भले ही गुरुदेव को जीवन की व्यस्तताओं में भूल जायें, पर वे अपने स्नेही परिजनों को कभी नहीं भूलेंगे।

पटना के वयोवृद्ध परिजन श्री मधेश्वर प्रसाद सिंह जी ने सबकी ओर से मंगल तिलक एवं मातृ संस्था के लिए दक्षिणा के लिफाफे के साथ शांतिकुंज टोली को विदाई दी। सभी वरिष्ठ भाइयों ने मिलकर विदाई का गीत गाया-''आओ मन में बसा लें श्रीराम को, चलो तन से करें प्रभु काम को ...''। शांतिकुंज की टोली ने सभी प्रतिभागियों पर गुरुसत्ता के आशीर्वचनों (मंत्रपाठ) के साथ पुष्पवृष्टि की। देव शक्तियों की विदाई की गई, जयकार तथा नारे समवेत स्वरों में बोले गए तथा शांतिपाठ के साथ कार्यशाला सम्पन्न हुई।

कार्यशाला में बोले गए शब्दों तथा गतिविधियों को अपने वीडियो कैमरे में उतारने के लिए शांतिकुंज के ई.एम.डी. विभाग के सदस्यों-श्री संतोष सिंह एवं श्री उमेश यादव ने अपने सभी उपकरणों को समेटना प्रारंभ किया। यहाँ से लौटकर उन्हें माँग करने वाले कार्यकर्त्ताओं को पूरी कार्यशाला की सीडी संपादित कर, भिजवाने के कार्य में लगना था।

पटना की जोनल कार्यशाला अपनी गौरव-गरिमा के साथ सम्पन्न हुई। बहुत दिनों तक परिजनों के हृदयों में इसकी सुवास बनी रहेगी। विश्वास किया जाता है, पूरे बिहार प्रान्त में जाग्रत् आत्माओं में नया उत्साह उभरेगा, युगशक्ति की उपासना का प्रचार गाँव-गाँव होगा, युग पुरुष के युगान्तरकारी विचार मनःस्थिति और परिस्थितियों में व्यापक परिवर्तन लायेंगे।

कार्यशाला की समाप्ति पर सभी सृजन सैनिक भाई-बहिन धीरे-धीरे भारी कदमों से मुक्ताकाश सभागार से निकल रहे थे। मन इसलिए भारी थे कि पूरे बिहार से आया हुआ देव परिवार बिछुड़ रहा था, पर खुशी इस बात की थी कि वे नये संकल्पों के बल से आप्लावित थे। वे कुछ कर-गुजरने के उत्साह से सराबोर मालूम पड़ते थे। सबको यह बोध हो चुका था कि युग निर्माण के विचार बहुत ऊँचे हैं, इनके साथ यदि संघशक्ति का बल मिल जाये, तो ये दस गुने अधिक वेगवान हो जायेंगे। ☯

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी युग चेतना ट्रस्ट शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा युगान्तर चेतना प्रेस शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार में मुद्रित। सम्पादक-वीरेश्वर उपाध्याय
पताः- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) पिन 249411
फोन- (01334) 260602, 261955, फैक्स - 01334-260866
www.pragyaabhiyan.info Email- news@pragyaabhiyan.info

RNI-NO.38653/80 R.No.UA/DN-16/06
LICENCE TO POST
W.O. PREPAYMENT
vide No. WPP/04/05
RENEWED UP TO 2008